एक सच्ची कहानी

ताई की बेबसी

विमला गोयल

सुबह-सुबह ताई की बेटी कमलेश का लिखा पोस्टकार्ड पाकर मन बहुत खराब हुआ। वह ताई जिनके आंगन में मैं गुड़िया खेलती थी, आज कितनी दुःखी है। एक दुबले-पतले कद की सांवली प्रतिमा आंखों के सामने आ गई। ताई का जीवन काफी संघर्षपूर्ण था। ताऊ कुछ खास पढ़े-लिखे नहीं थे। अपने और परिवार के गुज़ारे के लिए किराने की एक दूकान खोल ली थी। छोटे से बाज़ार के किनारे उनकी दूकान थी। बिक्री से गुज़र हो जाती थी।

ताई ने बेटे की आशा में पांच बेटियों को जन्म दिया। बेटियों के सुन्दर नाम रखे थे। शीला, सावित्री, राधा, उमा। जब पांचवीं बेटी हुई तो ताई ने भगवान से बेटियों के जन्म के लिए क्षमा मांगी और उसका नाम रखा क्षमा। तब जाकर ढेर सारी मनौतियों के बाद उनके घर पुत्र-रत्न का जन्म हुआ। प्यार से सब उसे बिल्लू पुकारते थे। बिल्लू मां-बाप एवं बहनों सबकी आंखों का तारा था।

ताई को अब बिल्लू के सिवा कुछ नज़र नहीं आता था। बिल्लू को छींक भी आ जाती या वह ज़रा सा रो भी पड़ता तो सारे घर में कुहराम मच जाता था। कोई झाड़-फूंक वाले को बुलाने जा रहा है, तो कोई हींग गरम कर पेट पर मल रहा है कि कहीं पेट में दर्द न हो। बिल्लू के रोते ही घर का सारा कामकाज ठप्प हो जाता था। बिल्लू की मुस्कराहट वापस आने पर ही सब चैन की सांस लेते थे। ताई खुश थी पर अभी एक वज्रपात और होना था। एक बिटिया रानी और आ गई, नाम रखा गया कमलेश।

ताऊ घर के किसी काम में दिलचस्पी नहीं लेते थे। खाली समय में आस-पास के लोगों के साथ बाग में पेड़ के नीचे चौपड़ खेलते रहते थे। उन्हें कोई फिक्र नहीं थी कि आधा दर्जन बेटियां कैसे ब्याही जाएंगी? ताई किसी तरह छोटी सी आमदनी में काट-छांटकर गुज़ारा करती थी। सबसे अच्छी चीज़ बिल्लू को दी जाती, फिर ताऊ को और उसके बाद बेटियों और ताई का नंबर आता था। कई बार तो ताई को कुछ चखने तक को नहीं मिलता था। बेटियों के बारे में उनका कहना था, "अरे, लड़कियों का क्या, वे अपनी ससुराल में जाकर खा-पहन लेंगी।" उन्हें बिल्लू ही सबसे प्रिय था।

ताई के भाइयों ने बेटियां ब्याहने में मदद की। पांच लड़कियों की शादी हो गई। बिल्लू पढ़ने में होशियार था। ऊंची सरकारी नौकरी में आ गया। दिल्ली में नौकरी लगी तो मां की आंखों का तारा दूर चला गया। एक साल बाद मकान मिलने पर वह मां-बाप और छोटी बहन को दिल्ली ले गया। सुंदर बड़े घराने की लड़की से ब्याह रचाकर ताई फूली नहीं समा रही थी।

कुछ दिनों बाद मैंने बिल्लू, उसकी बहू और कमलेश को खाने पर बुलाया। लड़की सुघड़ व सुन्दर लगी, पर ताई का ज़िक्र आने पर नाक-भौं सिकोड़ने लगी। बोली, "वह बड़े पुराने विचारों के लोग हैं। उन सब के साथ मैं अपने मन का कुछ भी नहीं कर सकती।" कमलेश की आंखें भाभी की बात सुनकर भर आईं पर कुछ बोल नहीं सकी।

एक बार ताऊ की बीमारी की खबर सुनकर वहां गई तो मन बड़ा खराब हुआ। ताऊ, ताई और कमलेश को घर के पीछे की कोठरी में भेज दिया गया था। बिल्लू की बहू सुनीता का कहना था कि उनके सामने के कमरे में रहने से सारा घर गंदा दीखता है। ताऊ काफी कमज़ोर लगे। एक मैली सी चादर ओढ़े हुए थे। ताई गुमसुम सी लगी। अपनों के बीच वह

पराए से रह रहे थे। कमलेश की शादी एक बड़े उम्र के आदमी से जिसकी पहली पत्नी से दो बच्चे थे कर दी गई थी। बेटियां मां-बाप से मिलने आती थीं। दो-चार दिन किसी तरह अनचाहे मेहमानों की तरह काट कर चली जाती थीं।

एक बार बिल्लू सरकारी काम से बाहर गया हुआ था। पीछे से ताऊ जी बिना बेटे को देखे ही संसार से कूच कर गए। फिर बिल्लू की नौकरी विदेश में लग गई। ताई को न चाहते हुए भी बड़ी बेटी के पास जाकर रहना पड़ा। एक बार जब उन्हें देखने गई तो वे मेरा हाथ पकड़ कर रोने लगीं—

"बिल्लू के हाथ की दो लकड़ियां शायद मुझे भी नसीब नहीं होंगी।" मैं सोचने लगी वह बिल्लू जिसके लिए उन्होंने जी जान लगा दी थी कुछ रुपए हर महीने भेजकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर लेता है।

आज चिट्ठी से ताई की दुर्दशा का अंदाज़ा हुआ। एक ओर दूर बसे अकेले पुत्र की ममता, दूसरी ओर उसके व उसकी बहू के व्यवहार से उनका मन बेहद दुःखी है। ताई बेटी के घर भी सुख-चैन से अपने संस्कारों की वजह से नहीं रह पा रही हैं।
क्या उनके मन की गहराई में कहीं कोई दोष-भावना कचोट पैदा कर रही है ? □